दृष्टि विज्ञान

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

सकारात्मक चिंतन से जीवन में सफलता प्राप्त होती है। किसी वस्तु के प्रति हमारी यथार्थ दृष्टि होनी चाहिए। दृष्टि का अर्थ है देखना। हम कैसे देखें? एक इन्द्रिय जगत है इसे हम प्रत्यक्ष देखते हैं। आन्तरिक जगत परमात्मा का जगत है। इसे देखना दृष्टि विज्ञान है। जड़ और चेतन को अलग–अलग देखना और जानना दृष्टि विज्ञान है। आत्मा सनातन सत्य है अन्य सभी वस्तुएं मिथ्या हैं यह जानना दृष्टि विज्ञान है। भौतिक वस्तुएं आज है कल नहीं रहेंगी। हवा का हल्का झौंका इन भौतिक वस्तुओं को नष्ट कर देता है। बड़े–बड़े महल, नदी, पहाड़ जितनी भी भौतिक वस्तुएं हैं उनमें समय–समय पर परिवर्तन होता रहता है। केवल चेतन तत्व ही स्थायी है। इस बात को जानना दृष्टि विज्ञान है।

जड़ और चेतन अलग–अलग हैं। चेतन के संयोग से जड़ भी चेतन की तरह प्रतीत होने लगता है। चेतन और जड़ का संयोग अनादि काल से है। सही दृष्टि होने पर ही दोनों को समझा जा सकता है। चेतन न तो जड़ हो सकता है और जड़ कभी चेतन नहीं हो सकता। दोनों का संयोग ही भौतिक संसार है। चेतना शाश्वत सत्य है। वह ज्ञाता, द्रष्टा अनादि और अनन्त है। वह सच्चिदानन्द स्वरूप है।

सही दृष्टि का अर्थ है राईट विजन अर्थात दृष्टि का सम्यक होना। हमारी धारणा सही होनी चाहिए। वास्तविकता को समझना चाहिए। तभी सही दिशा में प्रगति होती है। सही सोच का अर्थ है विधायक भाव होना। सम्पूर्ण सृष्टि में चौरासी लाख जीव योनियों के प्राणी रहते हैं। सबकी व्यवस्था प्रकृति करती है। सही दृष्टि यह है तकि इनके अस्तित्व का बोध हमें होना चाहिए।

इस सृष्टि में दो मूल तत्व है जीव और अजीव। जिसे सुख–दुःख की अनुभूति होती है, जिसमें हलन–चलन की क्रिया होती है, जिसमें चेतना रहती है वह जीव कहलाता है। जड़ पदार्थ अचेतन कहलाता है। इसमें पुद्गल की गणना होती है। परमाणुओं के मेल से सृष्टि बनती

है। चेतन तत्व के अस्तित्व को समझना, अनुभव करना आवश्यक है। कर्मों के अनुसार सभी को शरीर की प्राप्ति होती है।

चेतन साध्य है और जड़ पदार्थ साधन है। जड़ और चेतन के सहयोग से सृष्टि चलती है। प्रणीमात्र को चेतन को कष्ट नहीं देना चाहिए। यही सही दृष्टि, सही सोच है। जब दृष्टि सम्यक रहती है तो सोच भी सही हो जाती है। बिना दृष्टि के सही हुए वस्तु के अस्तित्व का ज्ञान नहीं हो सकता। नशे में धुत व्यक्ति वस्तु के अस्तित्व का ज्ञान नहीं कर सकता। वह मदमस्त रहता है। उसकी दृष्टि और उसकी सोच सही नहीं हो सकती। किन्तु एक सामान्य व्यक्ति सही दृष्टि और सही सोच वाला होता है। मानव को अपने समान अन्य प्राणियों के अस्तित्व को स्वीकार करना चाहिए। उसे यह महसूस करना चाहिए कि जैसे मेरा अस्तित्व है वैसे ही संसार के सभी प्राणियों का भी अस्तित्व है। यही अहिंसा बोध है। जब व्यक्ति में यह बोध आ जाता है तो उसकी दृष्टि और सोच सही हो जाती है।

सही दृष्टि और सही सोच के कारण समस्याओं का समाधान स्वयं हो जाता है। मानव अनेक समस्याओं को इसलिए पैदा कर लेता है कि उसे अस्तित्व बोध नहीं रहता। आज सबसे बड़ी समस्या पर्यावरण प्रदूषण की है। यह समस्या सही दृष्टि और सही सोच नहीं होने के कारण है। हमें वस्तुओं का उतना ही उपयोग करना चाहिए जितना आवश्यक है। मानव में परिग्रह की भावना इतनी अधिक हो गयी है कि उसकी दृष्टि और सोच ही बदल गयी है।

अनावश्यक रूप से पर्यावरण के साथ छेड़छाड़ करके पर्यावरण को प्रदूषित किया जा रहा है जिससे समस्याएं बढ़ती चली जा रही हैं। इन सब समस्याओं के पीछे मनुष्य की सोच ही कार्य कर रही है। यदि दृष्टि सही रहे तो दिशा अपने आप मिल जाती है। दिशाबोध होना आवश्यक है। यदि हम कहीं यात्रा करते हैं तो गंतव्य तक पहुंचने के लिए सही मार्ग चुनना पड़ता है। यदि सही मार्ग नहीं पकड़ेंगे तो हम कहीं दूसरी जगह पहुंच जायेगें। इसलिए सही दृष्टि और सही सोच को होना आवश्यक है।

मानव को षड्जीव निकाय का बोध होना चाहिए। षड्जीवनिकाय का सूक्ष्म विवेचन दर्शन में किया गया है। षड्जीवनिकाय के अन्तर्गत पृथ्वीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक,

वायुकायिक, वनस्पतिकायिक और त्रसकायिक जीवों की गणना होती है। जैन दर्शन में पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति को जीव माना गया है। ये सभी मिलकर पर्यावरण की रचना करते हैं तथा संतुलन बनाये रखने के लिए एक–दूसरे को प्रभावित करते हैं। किसी एक तत्त्व के असंतुलन से समूचा पर्यावरण प्रभावित होता है। विवेकी मनुष्य, पृथ्वी, जल आदि की हिंसा के परिणाम को जानकर न स्वयं इनकी हिंसा करें, न दूसरों से इनकी हिंसा करवाए और न ही हिंसा करने वालों का अनुमोदन करें।

प्रकृति की दृष्टि में एक पौधे का जीवन भी उतना ही मूल्यवान है, जितना एक मनुष्य का है। पेड़–पौधे पर्यावरण को प्रदूषण से मुक्त करने में जितने सहायक हैं, उतने मनुष्य नहीं हैं, वे तो पर्यावरण को प्रदूषित करते हैं। वृक्षों एवं वनों के संरक्षण तथा वनस्पति के दुरुपयोग से बचने के लिए सही दृष्टि होनी चाहिए।